महर्षिवाल्मीकिसंस्कृतविश्वविद्यालयः

मौनधारा (मून्दड़ी), कपिष्ठल (कैथल), हरियाणा

(हरियाणा सरकार के अधिनियम २०/२०१८ द्वारा संस्थापित एवं यू.जी.सी. की धारा २(एफ) के अन्तर्गत मान्यता प्राप्त)

अंक-७ | माह – अप्रैल – मई | वर्ष २०२२ | विक्रमी संवत् २०७९

महर्षि-प्रभा

मासिक ई-पत्रिका

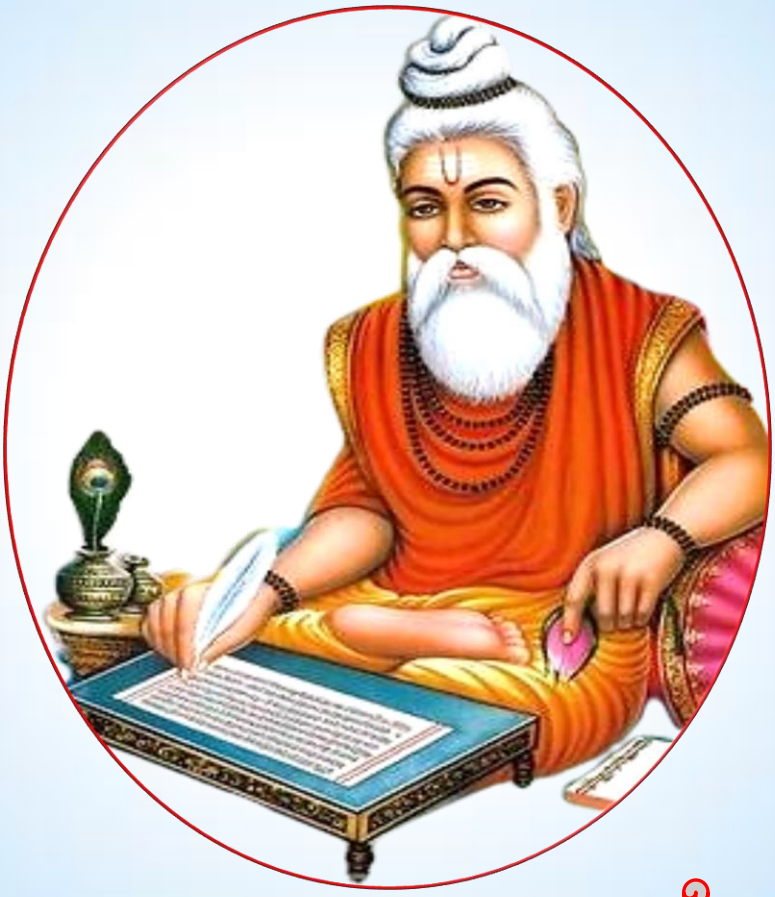

वाल्मीकये नमस्तस्मै कवये रामसाक्षिणे ।
रामायणं लिखित्वा यः प्रथितो धरणीतले ।।

संरक्षक

श्री बंडारु दत्तात्रेय
(महामहिम राज्यपाल)

श्री मनोहरलाल खट्टर
(मुख्यमंत्री हरियाणा)

श्री कंवरपाल गुर्जर
(माननीय शिक्षा मंत्री)

मार्गदर्शक

प्रो. बृजकिशोर कुठियाल
(अध्यक्ष, उच्च शिक्षा परिषद्, हरियाणा)

प्रो. रमेश चन्द्र भारद्वाज
(कुलपति)

सम्पादक

डॉ. कृष्ण चन्द्र पाण्डे

सहसम्पादक

डॉ. शशिकान्त तिवारी
डॉ. अखिलेश कुमार मिश्र
डॉ. शर्मिला

छात्र सम्पादिका

रजनी
शीतल

mvsu.ac.in

MVSUOFFICIAL

ई-मेल – maharishiprabhamvsu@gmail.com

सम्पादकीयम्

भारतस्य स्वराज्यस्य अमृतमहोत्सवस्यावसरे वयं विचारयामः चेत् स्पष्टं दृश्यते यत् वयमधुना समग्ररुपेण मानसिक पारतन्त्र्येण ग्रसिता स्मः। अधुना भारतीय समाजस्य अधिकांश जनाः मन्यन्ते यत् आंगल भाषां विना भारतस्य उन्नतिः न भवितुं शक्यते। आंग्ल भाषां प्रति समाजस्य अन्धानुरागः निश्चित रुपेण भारतीय समाजस्य कृते उचितं नास्ति। वयं जानीमः यत् स्वभाषां प्रति अभिमानमेव राष्ट्रं प्रति अभिमानं दर्शयति। उक्तमप्यस्ति-

जिसको न निज भाषा तथा निज राष्ट्र का अभिमान है।
वह नर नहीं पशु निरा है, और मृतक समान है॥

भाषा कस्यापि राष्ट्रस्य आत्मा भवति। स्वभाषा एव स्वसंस्कृतेः आधारो वर्तते। भाषायाः संस्कृतेः च संबन्धो शरीरात्मा इव भवति। यथा आत्मानं बिना शरीरं निस्तेजो भवति तथैव स्व भाषां विना संस्कृतिरपि प्राणरहितं भवति। भाषा एवं संस्कृतेः आधारो वर्तते। भारतीय संस्कृतेः आधारभूता भाषा का वर्तते ? इति वयं पृच्छामः चेतः उत्तरं स्पष्टं भवति 'संस्कृत भाषा'। परन्तु व्यवहार रूपे वयं पश्यामः अस्माकं राष्ट्रभाषा रूपेण हिन्दी भाषा अस्ति। परन्तु हिन्दी भाषायाः सम्मानमपि सर्वत्र न दृश्यते। अनेन एव उत्तरभारतस्य दक्षिणभारतस्य मध्ये मतभेदो उद्भूता। संस्कृत भाषा एव राष्ट्रस्य सर्व सम्मानिता, सर्वस्वीकृता भाषा वर्तते। परन्तु दौर्भाग्येण अधुना संस्कृत भाषायाः उपेक्षा सर्वत्र दृश्यते। संविधान निर्मातृ सभायाः प्रमुख सदस्य डॉ. भीमराव अम्बेडकर महोदयेन अपि संस्कृतभाषायाः समर्थनं कृतवान्। परं कचेन सदस्यानां विरोध कारणात् संस्कृत भाषायाः तथा सम्मानं न लब्धम्।

राष्ट्रे वर्धमाना आंग्ल भाषा प्रभावः तथा स्वभाषां प्रति उपेक्षा भाव निश्चित रुपेण चिन्तायाः विषयो वर्तते। भारतीय भाषाणां प्रति शासकवर्गस्य उपेक्षा भावः. युवानः आंग्ल भाषां प्रति आकर्षणं संस्कृतं प्रति उपेक्षा भावः समाजे विभेदः जनयति एकतः भारतीय ग्रामीण समाजो अस्ति यः भारतस्य पोषकः अस्ति अपरञ्च अपरपक्षे च तथाकथित आंग्ल पोषकः 'इण्डिया' इत्यस्य पोषकः है। आंग्ल भाषाया 'इण्डिया' इत्यस्य निर्माण भवति भारतीय भाषा 'भारत' इत्यस्य निर्माणं करोति।

हरियाणा राज्ये संस्कृत भाषां प्रति जनानां उत्साहो दृश्यते एतदर्थमेव अत्र संस्कृत विश्वविद्यालयस्य स्थापना राज्य सर्वकारेण कृता अस्ति। संस्कृत भाषा जन भाषा भवतु एतत् प्रयासं तु वर्तते एव सदैव भारतीय ज्ञान-विज्ञान परम्परायाः शिक्षणं अनुसंधानञ्च भवेत् इत्याशासे विश्वविद्यालयः संचाल्यमानो वर्तते।

डॉ कृष्ण चन्द पाण्डे
सम्पादक

प्रो. रमेश चन्द्र भारद्वाज ने संभाला विश्वविद्यालय के तीसरे कुलपति के रुप में कार्यभार

दिनांक 04-04-2022 को प्रो.(डॉ) रमेश चन्द्र भारद्वाज बने महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय के तीसरे कुलपति के रुप में कार्यभार ग्रहण किया। प्रो. भारद्वाज जी पिछले 38 वर्षों से दिल्ली विश्वविद्यालय में संस्कृत विषय के प्राध्यापक रहे व संस्कृत विभागाध्यक्ष रहे।

इस अवसर पर संस्कृत विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. राजकुमार मित्तल जी, कुलसचिव प्रो. यशवीर सिंह, उप-कुलसचिव डॉ रवि भूषण गर्ग व सभी शिक्षक और अधिकारीगण भी उपस्थित रहे।

विश्वविद्यालय के कुलपति गीतांशु को सम्मानित करते हुए

महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय के योग विभाग के शास्त्री वर्ष के छात्र गीतांशु ने 46 वीं वरिष्ठ राष्ट्रीय योगासन प्रतियोगिता 2021-22 में रजत एवं कास्य पदक प्राप्त किया। यह प्रतियोगिता योग स्पोर्टस एसोसिएशन ऑफ आन्ध्र प्रदेश की ओर से 26 से 29 मार्च को करवाई गई थी। अब गीतांशु का चयन थाइलैंड में आयोजित होने वाली एशियन योग प्रतियोगिता और मलेशिया में होने वाली प्रतियोगिता के लिए हुआ है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रमेश चन्द्र भारद्वाज जी ने गीतांशु को पदक एवं प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया।

महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय कैथल में आदिशंकराचार्य जयन्ती समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ अतिथियों द्वारा दीप प्रज्वलन से किया गया। कार्यक्रम में मुख्यातिथि के रुप में श्री अखण्डगीतापीठ शाश्वत सेवा आश्रम, कुरुक्षेत्र के परमाध्यक्ष परम पूजनीय महामण्डलेश्वर डॉ स्वामी शाश्वतानन्द गिरी महाश्य व अध्यक्षरुपेण महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय, कैथल के माननीय कुलपति प्रो. रमेश चन्द्र भारद्वाज जी उपस्थित रहे। मुख्यातिथि महोदय ने ब्रह्मज्ञान, सत्य, धर्म, नीति के विषय में अपने विचार रखे व बताया कि मनुष्य की बुद्धि हमेशा सकारात्मक होनी चाहिए। विश्वविद्यालय के कुलसचिव प्रो. यशवीर सिंह जी ने मुख्यातिथियों का धन्यवाद किया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के सभी प्राध्यापक, अधिकारी व कर्मचारी व छात्र-छात्रागण सभी उपस्थित रहे।

एकदिवसीय वेदव्याख्यानमाला

वेद की प्रासंगिकता सार्वकालिक है- प्रो. झा

दिनांक 28 मार्च 2022 को महर्षि बाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय के वेद विभाग द्वारा **"आधुनिक समय वेदानां प्रासंगिकता"** इस विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति **प्रो. राजकुमार मित्तल** जी ने किया। उन्होनें कहा कि आज विश्व में युद्ध की स्थिति का मुख्य कारण वैदिक ज्ञान विज्ञान का आभाव है।

मुख्य अतिथि के रूप में कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय के **पूर्व कुलपति प्रोफेसर देवनारायण झा** महोदय ने कहा कि वेद भूतकाल में प्रासंगिक था, प्रासंगिक है, प्रासंगिक रहेगा।

वक्ता के रूप में महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय रोहतक से **प्रोफेसर रवि प्रकाश आर्य** ने वेद के अन्दर निहित आधुनिक विज्ञान को प्रस्तुत किया।

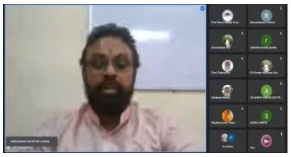

श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय नई दिल्ली से **डॉ. सुन्दर नारायण झा** ने वेद के अन्दर विराजमान विशिष्ट रहस्यों का समुद्घाटन किया।

लखनऊ परिसर केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय से वेद विभागाध्यक्ष **डॉ. डी. देवनाथन जी** ने वेद में कथित जल तथा पर्यावरण संरक्षण को प्रकट किया।

कार्यक्रम में उपस्थित अतिथियों का वाचिक स्वागत विभागाध्यक्ष डॉ. सुरेन्द्र वत्स ने किया तथा संचालन वेदविभाग प्रभारी डॉ अखिलेश कुमार मिश्र किया। कार्यक्रम में मंगलाचरण डॉ. रमाशंकर मिश्र ने तथा धन्यवाद ज्ञापन विश्वविद्यालय के कुलसचिव प्रो. यशवीर सिंह जी ने किया।

चैत्र माह की दुर्गाष्टमी के दिन विश्वविद्यालय में किया गया हवन और भण्डारे का आयोजन

हरियाणा प्रदेश के प्रथम संस्कृत विश्वविद्यालय में नवनियुक्त माननीय कुलपति प्रो. रमेश चन्द्र भारद्वाज जी के मार्गदर्शन में चैत्र माह के शुक्ल पक्ष की दुर्गाष्टमी के अवसर पर माँ दुर्गा की पूजा कर यज्ञ किया गया।

इस अवसर पर विश्वविद्यालय के आचार्यों, अधिकारियों, कर्मचारियों व विद्यार्थीयों ने विश्वकल्याण की कामना करते हुए हवन में आहूति प्रदान की। हवन के पश्चात् माननीय कुलपति महोदय ने सभी के साथ अपने जीवन का अनुभव को सांझा किया व अपने कार्य को सच्ची श्रद्धा एवं निष्ठा से करने का संदेश दिया।

हवन के उपरान्त भण्डारे में कन्यापूजन कर भोग लगाया गया व प्रसाद वितरण किया गया जिसमें कुलपति महोदय के साथ-साथ डॉ. बी. आर. अम्बेडकर राजकीय महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ. अनीता अरोड़ा के साथ महाविद्यालय व विश्वविद्यालय के सभी आचार्यों, अधिकारियों, कर्मचारियों और सभी विद्यार्थीयों ने प्रसाद ग्रहण किया।

पत्रकारिता में है लोकहित की भावना- प्रो. रमेश चन्द्र भारद्वाज

19 मई- राजकीय कॉलेज और विश्व संवाद केन्द्र कैथल के संयुक्त तत्त्वधान से नारद जयंती के उपलक्ष में एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें पत्रकारिता विभाग के छात्रों, कैथल के सदस्यों ने भाग लिया। कार्यक्रम का शुभारंभ नारद जी और मां सरस्वती के चित्र के समक्ष दीप प्रज्वलित किया गया।

कार्यक्रम के मुख्यातिथि के तौर पर महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति माननीय प्रो. रमेश चन्द्र भारद्वाज, मुख्यवक्ता वरिष्ठ पत्रकार दीपक वशिष्ठ और कार्यक्रम के अध्यक्ष के तौर पर राजकीय महाविद्यालय की प्राचार्या प्रो. अनिता अरोड़ा रही। मुख्यवक्ता ने अपने उद्बोधन में कहा कि पत्रकारिता का क्षेत्र चुनौतियों से भरा है इसमें मेहनत और जज्बे के साथ ही टिका जा सकता है।

मुख्यातिथि माननीय प्रो. रमेश चन्द्र भारद्वाज जी ने कहा कि नारद जी को देवर्षि का दर्जा प्राप्त है। यदि हम नारद जी को पत्रकार के रूप में देखें तो पता चलता है कि देवों,असुरों, साधारण व्यक्ति और अन्य किसी से भी किसी भी समय बात कर सकते थे। कार्यक्रम की अध्यक्ष प्रो. सुनीता अरोड़ा ने कहा कि पत्रकारिता का क्षेत्र अपार संभावनाओं से भरा हुआ है। किसी अन्य उद्योग की तुलना में इसकी विकास दर अधिक है अर्थात इसमें रोजगार के अवसर अधिक है। आज के युग में इलेक्ट्रानिक मीडिया, ग्राफिक्स, ऐनिमेशन, गेम, न्यूज मीडिया और नागरिक पत्रकारिता ने रोजगार के अनेक अवसर उत्पन्न किए हैं। इस कार्यक्रम का मंञ्च संचालन डॉ अभिषेक गोयल ने किया। इस अवसर पर डॉ मेहर सिंह, प्रो. अमित पाहवा, लैब सहायक रामभगत और विश्व संवाद केन्द्र के विभाग प्रमुख ऋषिपाल, मुकेश जिंदल, संजय रावत, सुभाष गिल, सुरेन्द्र सैनी, सचिन, प्रदीप आदि सभी सदस्य उपस्थित थे।

आजादी के 75 वें अमृतमहोत्सव के उपलक्ष्य में योग शिविर का आयोजन

आजादी के अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रमेश चन्द्र भारद्वाज ने बताया कि विश्वविद्यालय की तरफ से 45 दिनों तक योग शिविर आयोजित किये जायेंगे । जिसमें सूक्ष्म व्यायाम, योगासन, प्राणायाम, योग निद्रा एवं ध्यान का अभ्यास करवाया जाएगा। इस कार्यक्रम के तहत जिले के सात गावों एवं तहसीलों में पाँच दिवसीय योग शिविरों का आयोजन किया जायेगा जो 5 मई से प्रारम्भ होकर अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस (21 जून) तक जारी रहेगा।

05 मई को पांच दिवसीय योग शिविर का आयोजन कैथल के गांव मून्दडी में कुलपति प्रो. रमेश चन्द्र भारद्वाज जी की अध्यक्षता में किया । इस अवसर पर गांव के सरपंच श्री सुभाष जी, लवकुश तीर्थ ट्रस्ट के प्रधान श्री महेन्द्र जी उपस्थित रहे। कुलपति जी ने कहा कि विश्वविद्यालय का उद्देश्य समाज कल्याण है । इसलिए योग शिविर का आयोजन किया जा रहा है।

07 मई को पांच दिवसीय योग शिविर का आयोजन कैथल के पूण्डरी क्षेत्र में किया गया । इस कार्यक्रम में मुख्यातिथि के रुप में पुण्डरी विधानसभा क्षेत्र से विधायक व पशुधन विकास बोर्ड के चेयरमैन श्री रणधीर सिंह गोलन, मुख्यवक्ता सत्यचेतन जी महाराज, अध्यक्ष महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रमेश चन्द्र भारद्वाज उपस्थित रहे। मुख्यातिथि ने कहा कि योग जीवन का एक अभिन्न अङ्ग है, विश्वविद्यालय द्वारा योग शिविरों का आयोजन एक सराहनीय कार्य है। मुख्यवक्ता सत्यचेतनपुरी जी महाराज जी ने अपने वक्तवय में कहा कि योग एक सर्वोत्तम साधना है।

17 मई को पांच दिवसीय योग शिविर का आयोजन राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय चीका में किया गया जिसका शुभारम्भ डेयरी एवं विकास निगम बोर्ड के चेयरमैन रणधीर सिंह, स्वामी छवि रामदास जी, श्री सुभाष चन्द्र जी व आचार्य गिरिराज जी ने किया। चेयरमैन ने कहा कि योग को जीवन में अपनाने से बिना खर्च के हम स्वस्थ रह सकते हैं।

19 मई को पांच दिवसीय योग शिविर का आयोजन कलायत में स्थित बाल विकास पब्लिक स्कूल में योग प्रशिक्षण शिविर की पाठशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का आगाज नगरपालिका चेयरपर्सन शशिबाला कौशिक ने माँ सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्वलित करके किया। इस अवसर पर विशिष्ट मेहमान के रूप में भाजपा नेता एवं श्री कपिल मुनि तीर्थ कमेटी के प्रधान श्री राजू कौशिक, नगर पार्षद रणबीर धानिया, वाइस चेयरपर्सन पूजा धीमान और निशु सिंगला उपस्थित रहे।

20 मई को पांच दिवसीय शिविर का आयोजन कैथल के सजूमा गांव में किया गया । इस कार्यक्रम का शुभारम्भ मुख्यातिथि सरस्वती पब्लिक स्कूल के निदेशक श्री रोशनलाल व गांव के प्रधान महावीर द्वारा दीप प्रज्वलन किया गया। मुख्यातिथि जी ने योग के महत्त्व को बताते हुए कहा कि हम सभी के को प्रतिदिन योग करना चाहिए क्योंकि योग करने से हमारा शरीर व मन दोनों स्वस्थ रहते हैं। कार्यक्रम में मञ्च संचालन व योगाभ्यास डॉ देवेन्द्र सिंह जी द्वारा किया गया व आचार्य गिरिराज जी ने सभी का धन्यवाद ज्ञापन किया।

22 मई को पांच दिवसीय शिविर का आयोजन कैथल शहर के प्रसिद्ध स्थल श्री हनुमान वाटिका में किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ मुख्यातिथि चेतन पुरी जी महाराज, मुख्यवक्ता नरेन्द्र जिंदल, विभाग बौद्धिक प्रमुख राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ ने दीप प्रज्वलन कर किया। मुख्यवक्ता ने कहा कि केवल शारीरिक अभ्यास करना ही योग नही है, अपितु योग को जीवन का अभिन्न अंग बनाना चाहिए। सर्वप्रथम यम और नियम को जीवन में धारण करना चाहिए।

24 मई को पांच दिवसीय शिविर का आयोजन कैथल शहर के डोहर गांव में किया गया। इस कार्यक्रम का शुभारम्भ मुख्यातिथि संजय रावल, रोमा रावल व गांव के सरपंच राजीव कुमार के द्वारा दीप प्रज्वलन से किया गया । मुख्यातिथि जी ने बताया कि योग करने से हमारा शरीर व मन स्वस्थ रहता है।

आजादी के अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय द्वारा 05 मई से 24 मई तक चलाए जाने वाले योग शिविरों में मञ्च संचालक व योगाभ्यास योग आचार्य डॉ देवेन्द्र सिंह द्वारा किया गया। आचार्य योग के छात्रों द्वारा प्रशिक्षण दिया गया व विश्वविद्यालय की छात्राओं ने संस्कृत भाषा में प्रस्तुत सुरीले स्वागत गीत के माध्यम से अतिथियों का अभिनन्दन किया। विश्वविद्यालय द्वारा लगाए गए योग शिविरों का मुख्य उद्देश्य योग को आमजन तक पहुचाना है।

एकात्मता स्तोत्र

ॐ सच्चिदानन्दरूपाय नमोस्तु परमात्मने
ज्योतिर्मयस्वरूपाय विश्वमाङ्गल्यमूर्तये ।।१।।
प्रकृतिः पञ्चभूतानि ग्रहा लोकाः स्वरास्तथा
दिशः कालश्च सर्वेषां सदा कुर्वन्तु मङ्गलम् ।।२।।
रत्नाकराधौतपदां हिमालयकिरीटिनीम्
ब्रह्मराजर्षिरत्नाढ्यां वन्दे भारतमातरम् ।।३।।
महेन्द्रो मलयः सह्यो देवतात्मा हिमालयः
ध्येयो रैवतको विन्ध्यो गिरिश्चारावलिस्तथा ।।४।।

मलयगिरि

यह पर्वत प्राचीन भारत के सप्तकुल पर्वतों में से एक है । महर्षि अगस्त्य की तपोभूमि मलयगिरि पर्वत श्रेणियां दक्षिण भारत में स्थित हैं । यह मलयगिरि पर्वत चोल देश से लेकर सुदूर दक्षिण तक फैला हुआ है। इसका उत्तरी भाग मैसूर को स्पर्श करता है । चंद्रगिरि पर्वत इसके दूसरी ओर है। भगवान विष्णु को प्रिय यहां का मलयगिरि चंदन बहुत ही प्रसिद्ध है ।

हिमालय

हिमालय ऐसे विश्व के १० सबसे बडे चोटि में से ८ हिमाल नेपाल देश में स्थित एक प्राचीन पर्वत श्रृंखला है । हिमालय को पर्वतराज भी कहते हैं जिसका अर्थ है पर्वतों का राजा। कालिदास तो हिमालय को पृथ्वी का मानदंड मानते हैं । हिमालय की पर्वतश्रृंखलाएँ शिवालिक कहलाती हैं । विश्व की दस सबसे ऊंची पर्वत चोटियां हिमालय में ही स्थित है । हिमालय उत्तर में नेपाल देश की प्राकृतिक सीमा का निर्माण करता है । उत्तराखंड को श्रेय जाता है इस **"हिमालयोनाम नगाधिराजः** पर्वत का हृदय कहाने का। ईश्वर अपने सारे ऐश्वर्य-खूबसूरती के साथ वहाँ विद्यमान है । 'हिमालय अनेक रत्नों का जन्मदाता है (अनन्तरत्नप्रभवस्य यस्य), उसकी पर्वत-श्रंखलाओं में जीवन औषधियाँ उत्पन्न होती हैं (भवन्ति यत्रौषधयो रजन्याय तैल पुरत सुरत प्रदीपः), वह पृथ्वी में रहकर भी स्वर्ग है। (भूमिर्दिवभि वारूढं)।

रैवतक

रैवतक गुजरात में आधुनिक जूनागढ़ के पास का एक पर्वत है, जिसे **'गिरनार'** भी कहते हैं। इसी पर्वत पर अर्जुन (पाण्डव) ने सुभद्रा का हरण किया था । सुभद्रा बलराम की सहोदरा, रोहिणी के गर्भ से उत्पन्न हुई थी तथा अभिमन्यु की माता थी।

विन्ध्याचल

यह पर्वत प्राचीन भारत के सप्तकुल पर्वतों में से एक है । विंध्य शब्द की व्युत्पत्ति **'विध्'** धातु से कही जाती है । भूमि को बेध कर यह पर्वतमाला भारत के मध्य में स्थित है । यही मूल कल्पना इस नाम में निहित जान पड़ती है। विंध्य की गणना सप्तकुल पर्वतों में है । विंध्य का नाम पूर्व वैदिक साहित्य में नहीं है। इस पर्वत श्रंखला का वेद, महाभारत, रामायण और पुराणों में कई जगह उल्लेख किया गया है ।

अरावली

भारत के पश्चिमी भाग राजस्थान में स्थित एक पर्वतमाला है। भारत की भौगोलिक संरचना में अरावली प्राचीनतम पर्वत है। यह संसार की सबसे प्राचीन पर्वत श्रृंखला है जो राजस्थान को उत्तर से दक्षिण दो भागों में बांटती है। अरावली का सर्वोच्च पर्वत शिखर सिरोही जिले में गुरुशिखर (1722 /1727 मी.) है, जो माउंट आबू (सिरोही) में है। अरावली पर्वतमाला के आस-पास सदियों से भील जनजाति निवास करती रही है अरावली पर्वत श्रंखला का लगभग ८० % विस्तार राजस्थान में है, दिल्ली में स्थित राष्ट्रपति भवन रायसीना की पहाड़ी पर बना हुआ है जो अरावली पर्वत श्रृंखला का ही भाग है।

वेद की दृष्टि से मन्त्रों के द्वारा जिन देवताओं का वर्णन किया जाता है वे तीन रूपों वाले होते हैं । पुरुषविद्य एवं अपुरुषविद्य और उभयविद्य । इन्हीं स्वरूपों के माध्यम से किसी भी प्राकृतिक शक्ति, वस्तु, पदार्थ "वह जड़ भी हो सकता है और चेतन भी" का मन्त्रों के द्वारा प्रतिपादन किया जाता है । प्राणियों की नाना प्रकृति के कारण ऋषि योग इनका अनेकशः स्तवम करते हैं । इस प्रकार अचेतन पदार्थों में भी चेतनवत व्यवहार किया जाता है । इसी भावना को प्रकट करते हुए भारत के विभिन्न पर्वतों के पवित्र नामोंच्चार को भारतीय जीवन शैली का एक अभिन्न हिस्सा माना जाता है । ऐसे ही नदियों, तीर्थों, पवित्र स्थलों के नामोंच्चार को भारतीय संस्कृति में महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया है।

डॉ. मदन मोहन तिवारी
सहायक आचार्य (वेद)

मेरा नगर कैथल

कैथल नगर का वर्णन प्राचीनकालीन इतिहास में भी पाया जाता है । इतिहासकारों का मानना है कि कैथल का नाम कपिस्थल से बना है। कपिस्थल का अर्थ 'वानरों का स्थान' है । पुराणों के अनुसार यह नगर भगवान हनुमान की जन्मस्थली माना गया है। इस कारण से इस नगर का प्राचीन नाम कपिस्थल पड़ा, जो कालांतर में कैथल हो गया। हरियाणा सरकार ने कैथल को 1 नवम्बर 1989 ई को स्वतंत्र जिला घोषित किया था।

2011 की जनगणना के अनुसार कैथल का क्षेत्रफल-2,317 वर्ग कि.मी., जनसंख्या 1.074 मिलियन (2011) 278 गाँव, 7 खण्ड, 4 तहसील, 3 उप- तहसील, 69.2%शैक्षणिक स्तर है।

प्रसिद्ध व्यक्ति:- लीला राम गुर्जर, बी जे पी पार्टी से वर्तमान विधायक, श्रीमती कमलेश ढांडा, महिला एवं बाल विकास मंत्री (कलायत हल्का), रणधीर सिंह गोलन-पशुपालन व डायरी विभाग के चेयरमैन (पुण्डरी हल्का), रणदीप सिंह सुरजेवाला (काग्रेस पार्टी के पूर्व विधायक), जयप्रकाश (जे. पी.), वर्तमान में काग्रेस पार्टी के सदस्य व पूर्व पेट्रोलियम मंत्री। चरणदास शोरेवाला (हरियाणा के भूतपूर्व वित्तमंत्री), कुलवंत सिंह बाजीगर, पूर्व विधायक (गुहला हल्का), मनोज कुमार (मुक्केबाज) कॉमनवेल्थ खेलों के स्वर्ण पदक विजेता (राजौंद), मनीषा मौन (मुक्केबाज)- कांस्य पदक विजेता, परमवीर सिंह(भूतपूर्व मुम्बई पुलिस कमिश्नर)

शिक्षा :-

विश्वविद्यालय - महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय, मौनधारा (मून्दडी), कैथल, एन आई आई एल एम (NIILM) विश्वविद्यालय, कैथल

महाविद्यालय - डॉ. बी. आर. अम्बेडकर राजकीय महाविद्यालय, जगदीशपुरा, इन्दिरा गाँधी महिला महाविद्यालय, गवर्नमेंट पॉलिटेक्निक शेरगढ़, जाट कॉलेज ऑफ एजुकेशन, राधा कृष्ण सनातन धर्म (R.K.S.D.P.G. COLLEGE) स्नातकोत्तर महाविद्यालय, श्री राम कॉलेज ऑफ एजुकेशन, कैथल

अर्थव्यवस्था :-

यहाँ सहकारी चिन्नी मिल, चावल उद्योग, के साथ- साथ अम्बाला रोड़ पर लगभग सभी गाडियों (मारूती, महिन्द्रा, ह्यून्डाई, टाटा, फोर्ड, किया, रेनो, नेक्सा, टोयोटा, होन्डा) की एजेंसीयाँ हैं जिनके माध्यम से कैथल जिले के सैंकडों लोगों को रोजगार मिला हुआ है । कैथल के उद्योगो में हथकरघा, बुनाई, चीनी और कृषि उपकरणों का निर्माण शामिल है। यहां कृषि में गेहूँ और चावल की प्रधानता है। अन्य फसलों में तिलहन, गन्ना और कपास शामिल है।

तीर्थ / पर्यटन स्थल :-

नवग्रह कुंड - वृद्ध केदार झील किसी विशेष आकार में नहीं है। यह कई ओर से पुराने शहर (किले) को घेरे हुए है और कई स्थानों पर किले से दूर स्वतंत्रतापूर्वक फैली हुई है। इसके विभिन्न तटों, किनारों व कोनो पर कई मन्दिर एवं घाट है। जिनमें नवग्रह कुंड विशिष्ठ स्थान रखते हैं। जो सूर्य कुंड, चंद्र कुंड, मंगल कुंड, बुद्ध कुंड, बृहस्पति कुंड, शुक्र कुंड, शनि कुंड, राहु कुंड और केतु कुंड है।

ग्यारह रूद्री शिव मन्दिर - मान्यता है कि ग्यारह रूद्री शिव मन्दिर की स्थापना भगवान श्री कृष्ण ने उस समय की थी, जब कुरूक्षेत्र में महाभारत का युद्ध समाप्त हो गया था। युद्ध की समाप्ति के बाद भगवान श्री कृष्ण ने कौरव और पाण्डवों के बीच हुए युद्ध में मारे गए सैनिकों की आत्मिक शान्ति के लिए यहाँ 11 रूद्रों की स्थापना की थी । जिसकी गणना प्रसिद्ध तीर्थ कुरुक्षेत्र की 48 कोस भूमि की परिक्रमा के अन्तर्गत होती है।

गुरुद्वारा नीम साहिब - कैथल शहर के डोगरा गेट स्थित श्री गुरुद्वारा नीम साहिब काफी ऐतिहासिक है। यहां मुगलों से युद्ध के दौरान सिखों के नौंवे गुरु गुरु तेग बहादुर दिल्ली जाते समय से रुके थे और उन्होंने नीम के वृक्ष के नीचे बैठकर ध्यान लगाया था। यह नीम आज भी गुरुद्वारे में स्थित है।

गुरुद्वारा टोपियों वाला - प्रदेश में एक जिला ऐसा भी है जहां सुबह 4.30 बजे वाहे गुरु जी दा खालसा, वाहे गुरु जी दी फतेह के साथ गुरुग्रंथ साहिब का प्रकाश और सेवा का आरंभ होता है तो, 6 बजे गुरबाणी कीर्तन और आरती की गूंज सुनाई देती है। इसलिए इसे 'हरिमंदिर' भी कहा जाता है। यहां के संत टोपी पहनते हैं, इसलिए यह गुरुद्वारा टोपियों वाला के नाम से प्रसिद्ध है।

अंजनी माता का टीला - ऐतिहासिक मान्यता के अनुसार कैथल का अंजनी टीला मंदिर सतयुग से ही यहां स्थित है। यहां पहले एक विशाल टीला होता था। एक मान्यता यह भी है कि यहां पर माता अंजनी का निवास था और हनुमान जी का जन्म हुआ था। कपिस्थल के राजा भगवान हनुमान के पिता केसरी रहे हैं। बता दें कि शहर के पार्क रोड पर स्थित प्राचीन हनुमान मंदिर भी है।

बिदक्यार (वृद्ध केदार झील) - शहर में रेलवे गेट के पास स्थित वृद्ध केदार तीर्थ कई सदियों का इतिहास समेटे हुए है। तीर्थ का पूरा वर्णन वामन पुराण में मिलता है। तीर्थ के चारों तरफ 16 मंदिर हैं। प्राचीन काल में जिले के साथ-साथ देश में भी ये तीर्थ महत्वपूर्ण माना जाता था। यह चिल्ड्रन पार्क व बिद्क्यार झील के नाम से जाना जाता है।

रजिया सुल्तान की मकबरा - इतिहास में मिले उल्लेखों के अनुसार, रजिया बेगम के पति और उस वक्त बठिंडा के गवर्नर अल्तुनिया ने सेना का गठन करके दिल्ली पर आक्रमण के लिए कूच किया था। इस युद्ध में हार के पश्चात मजबूरन उन्हें दिल्ली छोड़कर भागना पड़ा। अगले दिन वो हरियाणा के कैथल में पहुंचे। जहां रजिया सुल्तान और उनके पति अल्तुनिया को उसकी ही सेना ने बगावत कर इसी स्थान पर मौत के घाट उतार दिया। रजिया को उनके पिता इल्तुतमिश की मौत के बाद दिल्ली का सुल्तान बनाया गया। इल्तुतमिश पहले ऐसे शासक थे जिन्होंने अपने बाद किसी महिला को उत्तराधिकारी नियुक्त किया।

ईंटों से बने मन्दिर - खुजराहो के मन्दिरों की शैली में बने ईंटों के मन्दिर कैथल के निकट कलायत में स्थित है। पौराणिक कथाओं के अनुसार 7वीं शताब्दी में यहां पर राजा शालिवाहन का राज्य था उसे श्राप मिला था कि वह रात में मर जायेगा, लेकिन किसी कारण वश वह नही मरा और श्राप से भी मुक्त हो गया। तब राजा ने प्रसन्न होकर यहां पर पाँच मन्दिरों का निर्माण करवाया ।

फ्लगू तीर्थ – फल्गु तीर्थ, नामक यह तीर्थ कैथल से लगभग 21 कि.मी. दूर फरल नामक ग्राम में स्थित है। फरल ग्राम का नामकरण भी सम्भवतः फलकी वन से ही हुआ प्रतीत होता है जहां फल्गु ऋषि निवास करते थे। इस तीर्थ का वर्णन महाभारत, वामन पुराण, मत्स्य पुराण तथा नारद पुराण में भी मिलता है। वामन पुराण के अनुसार सोमवार की अमावस्या के दिन इस तीर्थ में किया गया श्राद्ध पितरों को वैसा ही तृप्त और सन्तुष्ट करता है जैसा कि गया में किया गया श्राद्ध। कहा जाता है कि मात्र मन से जो व्यक्ति फलकीवन का स्मरण करता है निःसन्देह उसके पितर तृप्त हो जाते हैं।

कोटिकुट – कोटिकुट तीर्थ कैथल-पेहोवा मार्ग पर गाँव क्योडक में स्थित है। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार महाभारत के युद्ध के पश्चात माता कुन्ती ने पाप मुक्त होने के लिए यहां स्नान किया था। तत्पश्चात इसी मान्यता के आधार पर श्रद्धालु यहाँ स्नान करने आते हैं।

सडक मार्ग :- कैथल से दिल्ली, पंजाब, हरिद्वार, जम्मू, हिमाचल, जयपुर, राजस्थान आदि प्रमुख राज्यों के साथ- साथ हरियाणा के डबवाली, हिसार, सिरसा, चण्डीगढ, करनाल, कुरूक्षेत्र, यमुनानगर, फतेहाबाद आदि सभी जिलों में सीधी बस सेवा है।

वायु मार्ग :- कैथल के सबसे नजदीक चण्डीगढ़ तथा दिल्ली हवाई अड्डे "इंदिरा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे, नई दिल्ली" या "चंडीगढ़ अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे" है।

रेल मार्ग :- कुरुक्षेत्र से कैथल रेलवे स्टेशन व नरवाना होते हुए दिल्ली पहुँचना बहुत सरल हो जाता है । कुरूक्षेत्र-कैथल-नरवाना-जींद-रोहतक होते हुए दिल्ली के लिए व चण्डीगढ से कुरूक्षेत्र-कैथल-जीन्द-रेवाडी होते हुए जयपुर सीधी ट्रेन की सुविधा है।

सार्वजनिक सुविधाएं :- कैथल में शहर में सरकारी अस्पताल के साथ-साथ कई प्रसिद्ध निजी अस्पताल भी हैं जिनमें शाह अस्पताल, सूद अस्पताल, सिग्नस अस्पताल व गाँवों में स्वास्थ्य केन्द्र, पशु चिकित्सा केन्द्र, सब्जी मंडी, अनाज मंडी, बिजली घर, डाकघर, पद्मा सीटी मॉल, जिम खाना कल्ब व खेलने के लिए महाराजा सूरजमल खेल स्टेडियम, चौ. देवी लाल इनडोर खेल स्टेडियम, अनेको प्रकार की सुविधायें है। 250 अटल सेवा केन्द्र (ग्रामीण) 55 अटल सेवा केन्द्र (शहरी) नगर परिषद / नगर पलिका - 05 (कैथल, चीका, राजौंद, कलायत, पुन्डरी), 05 सरल केन्द्र हैं जिनकी सहायता से जन साधारण के सभी कार्य सुगता से हो जाते हैं।

रानी
आचार्य साहित्य (तृतीय सत्र)

प्रश्नमञ्जरी

(१) पाणिनी का व्याकरण सूत्रों पर आधारित हैं ?
(क) माहेश्वर सूत्र (ख) ब्रह्म सूत्र (ग)श्रौत सूत्र (घ) शुल्य सूत्र
(२) वज्र किस देवता का शस्त्र है ?
(क) इन्द्र (ख) विष्णु (ग) रूद्र (घ) त्वष्टा।
(३) वेदों के अनुसार अग्नि का प्रथम अविष्कार किया था ?
(क) च्यवन (ख) अत्रि (ग) भृगु (घ) अंगिरा।
(४) विश्व के सर्वश्रेष्ठ गणित शास्त्रज्ञ थे ?
(क) वराहमिहिर (ख) ब्रह्मगुप्त (ग) भास्कराचार्य (घ) केशवदैवज्ञ
(५) कालिदास का दूत काव्य है ?
(क) हंसदूत (ख) मेघदूत (ग) हनुमददूत (घ) गरूदूत
(६) अष्टाध्यायी के प्रणेता कौन थे ?
(क) कात्यायन (ख) पाणिनी (ग) चाणक्य (घ) कालिदास
(७) कादम्बरी का लेखक हैं ?
(क) कुमारिल भट्ट (ख) वाणभट्ट (ग) भारवि (घ) अश्वघोष
(८) श्रीमद्भागवत् में श्लोक हैं ?
(क) 15 हजार (ख) 20 हजार (ग) 18 हजार (घ) 28 हजार
(९) श्रीमद्भागवत् में अध्याय हैं ?
(क) 325 (ख) 345 (ग) 335 (घ) 470
(१०) ऋग्वेद के सप्तम मण्डल के द्रष्टा हैं ?
(क) विश्वामित्र (ख) वामदेव (ग) वशिष्ठ (घ) गृत्समद

(उत्तराणि अग्रिमे अङ्के)

(चतुर्थङ्कस्य उत्तराणि)

(1) व्यास (2) 10 मण्डल (3) रामायण (4) महाभारत (5) शंकराचार्य
(6) करुण (7)भवभूमि (8) विश्वामित्र (9) भरतमुनि (10) वाच्यार्थ

कृषिकाः कर्मवीरा

सूर्यस्तपतु मेधाः वा वर्षनतु विपुलं जलम्।
कृषिका कृषिको नित्यं शीतकालेऽपि कर्मठौ ।।१।।

भावार्थः- सूरज तपे, चाहे अत्यधिक बादल बरसे, किसान और महिला-किसान ठण्ड के समय भी काम करते हैं।

ग्रीष्मे शरीरं सस्वेदं शीते कम्पमयं सदा।
हलेन च कुदालेन वा तु क्षेत्राणि कर्षतः ।।२।।

भावार्थः- गरमी में शरीर पसीने से भरा हुआ हो या सर्दी में ठण्ड से कांपता हो, फिर भी दोनों (पति-पत्नि) हल से और कुदाल से खेत जोतते हैं।

पादयोर्न पदयात्रे शरीरे वसनानि नो।
निर्धनं जीवनं कष्टं सुखं दूरे हि तिष्ठति ।।३।।

भावार्थः- पैरों में न जुते हैं, न शरीर पर वस्त्र हैं। जीवन निर्धन एवं कष्टमय है। सुख दूर ही रहता है।

गृहं जीर्णं न वर्षासु वृष्टिं वारयितु क्षमम्।
तथापि कर्मवीरतं कृषिकाणां न नश्यति ।।४।।

भावार्थः- घर पुराना है (इसलिए) वर्षा के जल को रोक पाने में समर्थ नही है। फिर भी महिला किसानों की परिश्रम की भावना का नाश नही होता।

वयोः श्रमेण क्षेत्राणं सस्यपूर्णानि सर्वदा।
धरित्री सरसा जाता या शुष्का कण्टकावृता ।।५।।

भावार्थः- उनके परिश्रम से ही खेत फसल से भरे रहते हैं जो धरती सुखी और कांटों से भरी है, वह धरती सरस हो गई है।

कुसुम
(शास्त्री तृतीय वर्ष)

बाबा साहब डॉ. भीम रॉव अम्बेड़कर का जीवन परिचय

बाबा साहब भीम रॉव अम्बेड़कर एक महान समाज सुधारक, राजनीतिज्ञ और अर्थशास्त्री होने के साथ-साथ भारतीय संविधान के शिल्पकार भी थे। बाबा साहब का जन्म् 14 अप्रैल 1891 को मध्यप्रदेश के महू नामक स्थान पर हुआ। पिता श्री राम जी रॉव सतपाल और माता जी भीमा बाई के यहां हुआ था। बाबा साहब के पिता जी ब्रिटिश इंण्डियन आर्मी में सूबेदार के पद पर कार्यरत थे। बाबा साहब अपने माता-पिता की 14 वीं संतान थे व सबसे छोटे होने के कारण परिवार में सबके प्यारे थे।

बाबा साहब में बचपन से ही कुछ कर गुजरने की प्रतिभा कूट-कूट कर भरी हुई थी। बाबा साहब ने शिक्षा काल के दौरान बहुत सारी कठिनाईयों व ऊंच-नीच का सामना करना पड़ा। बाबा साहब सबसे ज्यादा पढ़े-लिखे विद्वान पुरूष थे। उनके पास 32 डिग्रियां थी। बाबा साहब ने अपने जीवन काल के दौरान संघर्ष करते हुए, समाज के दबे-कुचले लोगों व नारी जाति के उत्थान के लिए बहुत कार्य किये।

अग्रेंजों के साथ एक बहुत लम्बे संघर्ष के बाद जब 15 अगस्त 1947 को भारत आजाद हुआ तो बाबा साहब को देश के पहले कानून मंत्री बनने का गौरव प्राप्त हुआ। जब आजाद भारत के लिए संविधान निर्माण की बात आई तो बाबा साहब को 29 सितम्बर 1947 को संविधान सभा का अध्यक्ष बनाया गया और बाबा साहब के कड़े प्रयास के बाद भारत का संविधान 2 साल 11 महीनें 18 दिन में बनकर तैयार हुआ। संविधान सभा के अध्यक्ष बाबा साहब डॉ. भीम रॉव अम्बेड़कर ने भारतीय संविधान को भारत के पहले राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद को 26 नवम्बर 1949 को सौंप दिया था।

"शिक्षा शेरनी का वह दूध है, जो पिएगा वह दहाड़ेगा"

डॉ भीमराव अंबेडकर ने 1907 में मैट्रिकुलेशन पास करने के बाद एली फिस्टम कॉलेज में 1912 में ग्रेजुएट हुए। 1913 और 15 प्राचीन भारत व्यापार पर एक शोध प्रबंध लिखा था। डॉ भीमराव अंबेडकर ने 1915 में कोलंबिया विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र में एमए की शिक्षा ली। 1917 में पीएचडी की उपाधि प्राप्त कर ली। नेशनल डेवलपमेंट फॉर इंडिया एंड एनालिटिकल स्टडी विषय पर उन्होंने शोध किया।

1917 में ही लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स में उन्होंने दाखिला लिया लेकिन साधन के अभाव के कारण वह अपनी शिक्षा पूरी नहीं कर पाए। कुछ समय बाद लंदन जाकर लंदन स्कूल ऑफ़ इकोनॉमिक्स से अधूरी पढ़ाई उन्होंने पूरी की। इसके साथ-साथ एमएससी और बार एट-लॉ की डिग्री भी प्राप्त की। अपने युग के सबसे ज्यादा पढ़े लिखे राजनेता और एवं विचारक थे। भीम राव आंबेडकर जीवनी कुल 64 विषयों में मास्टर थे, 9 भाषाओं के जानकार थे, विश्व के सभी धर्मों के रूप में पढ़ाई की थी।

भीम राव आंबेडकर जीवनी में महत्वपूर्ण दो रचनावलियों के नाम नीचे दिए गए हैं:-

1. डॉ बाबासाहेब आंबेडकर राइटिंग्स एंड स्पीचेज (महाराष्ट्र सरकार द्वारा प्रकाशित)
2. साहेब डॉ अंबेडकर संपूर्ण वाड्मय (भारत सरकार द्वारा प्रकाशित)

डॉ भीमराव अंबेडकर सन 1948 से मधुमेह (डायबिटीज) से पीड़ित थे और वह 1954 तक बहुत बीमार रहे थे। 3 दिसंबर 1956 को डॉ भीमराव अंबेडकर ने अपनी अंतिम पांडुलिपि बुद्ध और धम्म उनके को पूरा किया और 6 दिसंबर 1956 को अपने घर दिल्ली में अपनी अंतिम सांस ली थी।

संजीव कुमार
लिपिक (शैक्षणिक शाखा)

मूर्ख भृत्य

कस्मिंश्चित नगरे एकः धनिकः प्रतिवसतिस्म । तस्य एकः आज्ञाकारी मूर्खः भृत्यः आसीत । धनिक तम् यथा आदिशति स्म, बुद्धिः प्रयोगं कदापि न करोति स्मं । एकदा धनिकः तम् लवणंम् आनेतुम् आदिशत् । सः आपंणं गत्वा जीर्णे वस्त्रे लवणं वद्ध्वा आनयत् । मार्गे जीर्णवस्त्रात् सर्वं लवणं भूमौ अपतत् । ततः क्रोधेन धनिकः तम् अवदत – "रे मूर्ख, किं कोऽपि लवणं अपि जीर्णे वस्त्रे आनयति भविष्ये वस्तूनि मञ्जूषायाम् एव आनय ।"

अत्रान्तरे धनिकस्यः पुत्रः भृत्यं विडाल शावकं आनेतुं अकथयत । भृत्यः तम शावकं मञ्जूषायां निक्षिप्त दृढवस्त्रेण वद्ध्वा आनयति । श्वासअवरोधेन शावकः मृत्युं कथयति यत् भो मूर्ख किं न जानासि यत् पथून दोरेकेण वद्ध्वा एव आनेतव्यम् । अग्रिम दिवसे धनिकस्य भार्या भृत्यं दुग्धं आनेतुम प्रेषयति । सः आपणं गत्वा पात्रे दुग्ध नीत्वा पात्रं च दोरकेण बद्ध्वा कर्षणं कृत्वा आनयति । मार्गे पात्रं लुठति सर्वं दुग्धं च भूमौ पतति ।

निराशो भूत्वा धनिक भृत्वा भृत्यं वदति भो महापण्डित ! दूरं अपसर, कृष्णं भवतु ते मुखम् । एतत् श्रुत्वा आज्ञापालकः भृत्यः बहिः गत्वा कज्जलेन मुखं संलिप्य प्रत्यागच्छति तम् एवं विलौक्य धनिक स्वभालं हस्तेन ताड़यति कथयति च ।

वरं भृत्यविहीनस्य जीवितं श्रमपूरितम् ।
मूर्ख भृत्यस्य संसर्गात् सर्वं कार्यं विनश्यति ।।

अमनदीप (आचार्य द्वितीय वर्ष)

सर्वे शिक्षिकाभ्यः शिक्षकेभ्यः च समर्पितम्

किम् अस्ति तत् पदम्
यः लभते इह सम्मानम्
किम् अस्ति तत् पदम्
यः करोति देशानाम् निर्माणम्

किम् अस्ति तत् पदम्
यम् कुर्वन्ति सर्वे: प्रणामम्
किम् अस्ति तत् पदम्
यस्य छायायाम् प्राप्तम् ज्ञानम्

किम् अस्ति तत् पदम्
यः रचयति चरित्रः जनानाम्
'गुरु' अस्ति अस्य पदस्य नाम
सर्वेषाम् गुरूणाम् मम शतं शतं प्रणामः !!

मोनिका (शास्त्री प्रथम वर्ष)

अमृतवचनम्

सा विद्या या मदं हन्ति सा श्रीर्यार्थिषु वर्षति ।
धर्मानुसारिणी या च सा बुद्धिरभिधीयते ।।

विद्या वह है जो मद को दूर करे । लक्ष्मी वह है जो याचकों पर बरसे । बुद्धि वह है जो धर्मानुसारिणी हो ।

बंकिमचन्द्रचटर्जी

बंकिमचन्द्रचटर्जीमहोदयस्य अस्माकं देशे महान् साहित्यकारेषु सर्वश्रेष्ठ-स्थानमस्ति । 'स्वतन्त्रता-क्रान्ति' इत्यस्य अग्रदूत, वन्देमातरम् गीतस्य प्रणेता बंकिमचन्द्रस्य जन्म १८३८ तमवर्षे कोलकत्ता नगरस्य पार्श्वे कांटालपाडा ग्रामे एकः उच्च ब्राह्मणपरिवारे अभवत् । तस्य पिता श्रीयादवचन्द्र-चट्टोपाध्याय बंगालस्य मेदिनापुर जनपदस्य डिप्टी कलेक्टर आसीत् ।

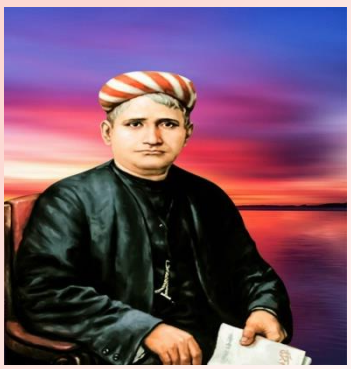

अतः बंकिमस्य प्रारम्भिक-शिक्षा तत्रैव जाता । बाल्यकालात एव तस्य रुचिः संस्कृतस्य प्रति आसीत् । आंग्लस्य प्रति तस्य रुचिः तदा समाप्तम् अभवत्, यदा तस्य आंग्ल-अध्यापकः तम् अत्यन्त क्रोधेन ताडितवान् । तस्य अत्यधिक रूचिः क्रीडायाम् आसीत् । सः एकः मेधावी एवञ्च परिश्रमी छात्रः आसीत् । १८५८ तमवर्षे महाविद्यालयस्य परीक्षा पूर्णम् अकरोत् । स्नातकोत्तरस्य परीक्षायां ते प्रथम-श्रेण्यां उत्तीर्णम् कृतवान् । पितुः आज्ञायाः पालनं कृत्वा तम् १८५८ तमवर्षे एव 'डिप्टी-मजिस्ट्रेट' इत्यस्य पदभारं स्वीकृतवान् । सर्वकारी व्यवसाये स्थित्वा तम् १८५७ वर्षे कार्यं कृतवान् आसीत्, यस्य शासन-प्रणाली इत्येषु आकस्मिक परिवर्तनम् अभवत् । अतः सः साहित्यस्य माध्यमेन स्वतन्त्रता-आन्दोलनस्य कृते जागृति इत्यस्य संकल्पं स्वीकृतवान् ।

सः एकः महान् साहित्यकारः आसीत् । बंकिमः मासिकपत्रिका बंगदर्शनस्य सम्पादनं कृतवान् । रविन्द्रनाथस्य रचनाः अस्मिन् पत्रिकायां प्रकाशितं भवति स्म । साहित्यप्रचारः, देश-सेवा नवलेखकान् प्रोत्साहन दातव्यम् विचारेण सः बंगदर्शनस्य प्रकाशनम् आसीत् ।

तस्य प्रथमः उपन्यासः दुर्गेश-नन्दिनी इति प्रकाशितं आसीत् । संस्कृत-भाषायां प्रकाशितः उपन्यासे अकबरयुगीन सामाजिक, राजनीतिक परिस्थितिनां सजीव चित्रणमस्ति । तस्य द्वितीय उपन्यास कपाल कुण्डला एकः काल्पनिक उपन्यासोऽस्ति, यस्य कापालिकानां आचार-व्यवहारस्य चित्रणोऽस्ति । तस्य सर्वश्रेष्ठोपन्यासोऽस्ति- आनन्दमठ, यः तत्कालीनसमये देशभक्तानां ग्रीवायाः कण्ठहारः आसीत् । आनन्दमठस्य संन्यासी पात्रस्य माध्यमेन वन्देमातरम् इत्यस्य जयघोषं कृतवान् ।

रजनी (संस्कृत पत्रकारिता)

विद्या धनं सर्वधनं प्रधानम् !

विद्यां ददाति विनयं विनयाद् याति पात्रताम् ।
पात्रत्वात् धनमाप्नोति धनात् धर्मं ततः सुखम् ।।

भावार्थः- ज्ञान विनय देता है; विनय से पात्रता, पात्रता से धन, धन से धर्म और धर्म से सुख की प्राप्ति होती है ।

माता शत्रुः पिता वैरी येन बालों ने पाठितः ।
न शोभते सभामध्ये हंसमध्ये बको यथा ।।

भावार्थः- जो माता-पिता अपने बच्चों को शिक्षित नहीं करते हैं, वे माता-पिता शत्रु के समान होते है, क्योंकि ऐसा व्यक्ति हंसों के बीच बगुले की तरह विद्वानों की सभा में शोभा नहीं पाता है ।

न चोरहार्यं न च राजहार्यं, न भ्रातृभाज्यं न च भारकारी।
व्यये कृते वर्धते एव नित्यं, विद्याधनं सर्वधन प्रधानम् ।।

भावार्थः- ज्ञान का धन कोई चुरा नहीं सकता, राजा उसे नहीं ले सकता, वह भाइयों में बाँटा नहीं जाता, बोझ नहीं होता, खर्च करने से बढ़ता है । वास्तव में शिक्षा ही धन है ।

नास्ति विद्यासमो बन्धुर्नास्ति विद्यासमः सुहृत् ।
नास्ति विद्यासमं वित्तं नास्ति विद्यासमं सुखम् ।।

भावार्थः- विद्या जैसा कोई मित्र नहीं है, (और) विद्या के समान कोई धन या सुख नहीं है ।

रजनी
(आचार्य व्याकरण प्रथम वर्ष)